



**ग्रामिण कृषि मौसम सेवा**

उद्यानविद्या महाविद्यालय, मुळदे ता. कुडाळ, जि. सिंधुदुर्ग  
हवामान पूर्वानुमान कृषि सल्ला पत्रक - सिंधुदुर्ग  
कालावधी (दिनांक २६.०१.२०२१ ते ३०.०१.२०२१)

| अंक ०८/२०२१   |                             |  |                             |                                    |                             |                             | दिनांक २५.०१.२०२१                  |                        | कालावधी ५ दिवस   |                                  |                            |                            |                            |
|---|-----------------------------|--|-----------------------------|------------------------------------|-----------------------------|-----------------------------|------------------------------------|------------------------|--|----------------------------------|----------------------------|----------------------------|----------------------------|
| मागील आठवड्यातील हवामान घटकांची प्रत्यक्ष नोंद<br>(१८/०१/२०२१ ते २४/०१/२०२१ पर्यंत) |                             |  |                             |                                    |                             |                             | हवामानाचे घटक                      |                        | पुढील पाच दिवसांचे हवामान घटकांचे पूर्वानुमान<br>(वैधता २६.०१.२०२१ ते ३०.०१.२०२१ पर्यंत) |                                  |                            |                            |                            |
| १८/०१   | १९/०१                       | २०/०१  | २१/०१                       | २२/०१                              | २३/०१                       | २४/०१                       | दिनांक                             |                        | २६/०१  | २७/०१                            | २८/०१                      | २९/०१                      | ३०/०१                      |
| ०.०   | ०.०                         | ०.०  | ०.०                         | ०.०                                | ०.०                         | ०.०                         | पाऊस (मि. मी)                      |                        | ०  | ०                                | ०                          | ०                          | ०                          |
| ३६.०  | ३५.०                        | ३५.०   | ३५.०                        | ३५.०                               | ३५.०                        | ३५.०                        | कमाल तापमान (अ. से)                |                        | ३३   | ३२                               | ३२                         | ३२                         | ३३                         |
| २०.०  | १९.५                        | १९.०   | १८.०                        | १७.०                               | १७.५                        | १८.०                        | किमान तापमान (अ. से)               |                        | १७   | १६                               | १७                         | १८                         | १८                         |
| निरभ  | निरभ                        | निरभ   | निरभ                        | निरभ                               | निरभ                        | निरभ                        | सकाळ                               | मेघाच्छादन<br>(ऑक्टा.) | २  | २                                | १                          | २                          | ३                          |
| निरभ  | निरभ                        | निरभ   | निरभ                        | निरभ                               | निरभ                        | निरभ                        | दुपार                              |                        |  |                                  |                            |                            |                            |
| ९१  | ९१                          | ९३   | ९४                          | ९०                                 | ९०                          | ९२                          | सकाळची सापेक्ष आर्द्रता (%)        |                        | ८८   | ८५                               | ८५                         | ८४                         | ८४                         |
| ४२  | ४६                          | ४२   | ६२                          | ६२                                 | ६२                          | ५१                          | दुपारची सापेक्ष आर्द्रता (%)       |                        | ५०   | ४८                               | ४८                         | ४५                         | ४५                         |
| ०.७   | ०.३                         | ०.९  | ०.५                         | ०.९                                | ०.७                         | ०.७                         | वा-याचा वेग (कि.मी/तास)            |                        | ००५  | ००५                              | ००५                        | ००६                        | ००६                        |
| स्थिर   | स्थिर                       | स्थिर  | स्थिर                       | स्थिर                              | स्थिर                       | स्थिर                       | सकाळ                               | वा-याची<br>दिशा        | पूर्वोत्तर/<br>ईशान्ये कडे   | पूर्वोत्तर/<br>ईशान्ये कडे       | पूर्वोत्तर/<br>ईशान्ये कडे | पूर्वोत्तर/<br>ईशान्ये कडे | पूर्वोत्तर/<br>ईशान्ये कडे |
| पश्चिमोत्तर/<br>वायव्ये कडे   | पश्चिमोत्तर/<br>नैऋत्ये कडे | पश्चिमोत्तर/<br>नैऋत्ये कडे  | पश्चिमोत्तर/<br>वायव्ये कडे | पश्चिमोत्तर/<br>नैऋत्ये कडे        | पश्चिमोत्तर/<br>नैऋत्ये कडे | पश्चिमोत्तर/<br>नैऋत्ये कडे | दुपार                              |                        |  |                                  |                            |                            |                            |
| मागील वर्षातील (२०२०) पर्जन्य (मि. मी)  |                             |  |                             | १/०१/२०२१ पासूनचे पर्जन्य (मि. मी) |                             |                             | १/०६/२०२१ पासूनचे पर्जन्य (मि. मी) |                        |  | मागील आठवड्यातील पर्जन्य (मि.मी) |                            |                            |                            |
| ४८६०.०  |                             |  |                             | ११.६                               |                             |                             | ०.०                                |                        |  | ०.०                              |                            |                            |                            |
| पुढील ५ दिवसांच्या हवामानाची सामान्य स्थिती   |                             | सिंधुदुर्ग जिल्ह्यामध्ये पुढील पाच दिवसांमध्ये दिनांक २६ ते ३० जानेवारी, २०२१ या कालावधी दरम्यान पर्जन्यमान कोरडे राहण्याची शक्यता आहे त्याचबरोबर कमाल व किमान तापमानात घट होऊन आर्द्रतेमध्ये घट होण्याची शक्यता असून हवामान कोरडे व मुख्यत्वे निरभ राहण्याची शक्यता आहे. असा अंदाज प्रादेशिक हवामानशास्त्र केंद्र, मुंबई यांच्याकडून वर्तविण्यात आला आहे.   |                             |                                    |                             |                             |                                    |                        |  |                                  |                            |                            |                            |
| इशारा   |                             | सिंधुदुर्ग जिल्ह्यामध्ये पुढील पाच दिवसासाठी प्रादेशिक हवामानशास्त्र केंद्र, मुंबई यांच्याकडून पर्जन्यासंबंधी कोणताही इशारा देण्यात आलेला नाही.  |                             |                                    |                             |                             |                                    |                        |  |                                  |                            |                            |                            |
| सर्वसाधारण कृषि सल्ला   |                             | कोकणातील जांभ्या जमिनीत अन्नद्रव्ये व्यवस्थापनासाठी खतांच्या शिफारशीचा अवलंब करून काजुच्या बियांचे अधिक उत्पन्न घेण्यासाठी आणि पानावरील पिवळ्या डागांचे नियंत्रण करण्यासाठी ०.२५ टक्के (युरिया, एस.ओ.पी, एस.एस. पी, प्रत्येकी) + ०.२५ टक्के (झिंक सल्फेट, बोरॅक्स, कॉपर सल्फेट प्रत्येकी) + ०.०१ टक्के सोडियम मोलिब्डेट यांच्या तीन फवारण्या अनुक्रमे मोहर येण्याच्या एक महिना अगोदर, मोहरावर आणि फळधारणेच्यावेळी कराव्यात अशी शिफारस करण्यात येत आहे. |                             |                                    |                             |                             |                                    |                        |  |                                  |                            |                            |                            |
| संक्षिप्त संदेश सल्ला   |                             | थंडीमुळे नविन येणारा मोहोर टाळण्यासाठी जिब्रेलिक अॅसिड ५० पीपीएम (१ ग्रॅम २० लिटर पाण्यात मिसळून) फवारणी प्रथम पुर्ण मोहोर उमललेला असताना व नंतर मोहोरीच्या आकाराची फळे झाल्यावर संपूर्ण झाडावर करावी.   |                             |                                    |                             |                             |                                    |                        |  |                                  |                            |                            |                            |

**हवामान अंदाजावर आधारीत कृषि सल्ला**

| पिकाचे नाव | पिकाची अवस्था     | पिक निहाय कृषि सल्ला  |
|------------|-------------------|---|
| आंबा       | फुलोरा ते फळधारणा | <p>थंडीमुळे नविन येणारा मोहोर टाळण्यासाठी जिब्रेलिक अॅसिड ५० पीपीएम (१ ग्रॅम २० लिटर पाण्यात मिसळून) फवारणी प्रथम पुर्ण मोहोर उमललेला असताना व नंतर मोहोरीच्या आकाराची फळे झाल्यावर संपूर्ण झाडावर करावी. जिब्रेलिक अॅसिडची पावडर पाण्यात अविद्राव्य असल्याने प्रथमतः थोड्या अल्कोहोलमध्ये विरघळवून नंतर पाण्यात मिसळावी.</p> <p>विद्यापीठाच्या शिफारशीनुसार मोहोरलेल्या झाडांना फळगळ कमी होऊन चांगली फळधारणा होण्यासाठी आम्रशक्ती या विद्राव्य अन्नद्रव्याची १ लि. प्रति १९ लि. पाणी याप्रमाणात फवारणी करावी. सदर १९ लि. द्रावण हे चार मोहोरलेल्या झाडांसाठी वापरावे. दुसरी व तिसरी फवारणी फळे वाटाणा व गोटी आकारची असतांना करावी.</p> <p>तसेच उत्पन्न वाढविण्यासाठी व फळांची प्रत सुधारण्यासाठी फळे वाटाणा, गोटी व सुपारीच्या आकाराची असतांना १ टक्का पोटॅशियम नायट्रेटची तीन वेळा फवारणी करावी.</p> <p>जिल्ह्यामध्ये काही ठिकाणी कोवळ्या फळांची गळ आढळून आलेली आहे. अशा ठिकाणी चौथ्या ते सहाव्या फवारणीपासून २ टक्के युरिया (२० ग्रॅम युरिया/लि. पाणी) किटकनाशकाच्या द्रावणात मिसळून फवारावे.</p> <p>सध्यपरीस्थीत आंबा पिक फुलोरा अवस्थेत आहे. तरी आंबा बागायतदारांनी तुडतुडे, बोंगे खाणा-या अळ्या व भुरी रोगाचा प्रादुर्भावपासून दक्ष राहण्याची आवश्यकता आहे. आवश्यकता असल्यास त्यांच्या नियंत्रणासाठी २० टक्के क्विनॉलफॉस २० मि.ली. किंवा २० टक्के कार्बारिल पा.मि.भु. २० ग्रॅम किंवा ५० टक्के प्राफेनॉफॉस १० मिली + कार्बेन्डेझिम १० ग्रॅम किंवा ८० टक्के पाण्यात मिसळणारे गंधक २० ग्रॅम प्रति १० लिटर पाण्यात मिसळून संपूर्ण झाडावर फवारणी करावी.</p> <p>आंबा मोहोरावर करपा रोगाचा प्रादुर्भाव आढळून आल्यास नियंत्रणासाठी आवश्यकतेनुसार १% कार्बेन्डाझिम (१० ग्रॅम १० लिटर पाण्यात) या बुरशिनशाकाची फवारणी घ्यावी.</p> <p>मोहोरावर फुलकीडींचा (थीप्स) प्रादुर्भाव आढळून आल्यास अशा ठिकाणी फुलकीडींच्या नियंत्रणासाठी ४५ टक्के स्पीनोसॅड २.५ मि.ली. प्रति १० लिटर पाण्यातून संपूर्ण झाडावर फवारावे.</p> |
| काजु       | फळधारणा           | <p>काजुच्या मोठ्या लागत्या कलमांना १५ दिवसांच्या अंतराने १५० - २०० लीटर पाणी प्रति कलम याप्रमाणे द्यावे.</p> <p>कोकणातील जांभ्या जमिनीत अन्नद्रव्ये व्यवस्थापनासाठी खतांच्या शिफारशीचा अवलंब करून काजुच्या बियांचे अधिक उत्पन्न</p>   |

|              |                        |  |
|--------------|------------------------|--|
|              |                        | <p>घेण्यासाठी आणि पानावरील पिवळ्या डागांचे नियंत्रण करण्यासाठी ०.२५ टक्के (युरिया, एस.ओ.पी, एस.एस. पी, प्रत्येकी) + ०.२५ टक्के (झिंक सल्फेट, बोरॅक्स, कॉपर सल्फेट प्रत्येकी) + ०.०१ टक्के सोडियम मोलिब्डेट यांच्या तीन फवारण्या अनुक्रमे मोहर येण्याच्या एक महिना अगोदर, मोहरावर आणि फळधारणेच्यावेळी कराव्यात अशी शिफारस करण्यात येत आहे.</p> <p>काजुमधील मोहोर परीपक्व होण्याच्या अवस्थेत आहे. आगामी काही दिवसात फळधारणा होण्याची शक्यता लक्षात घेता काजु बागायतदारांनी ठेकण्या व फुलकिडीच्या प्रादुर्भावपासून दक्षता घेण्याची गरज आहे. तरी काजुतील मोहोराचे व बोंडुचे ठेकण्या व फुलकिडीपासून संरक्षण करणे गरजेचे आहे. प्रादुर्भाव आढळून आल्यास नियंत्रणासाठी प्रवाही मोनोक्रोटोफॉस ३६% १५ मि.ली. किंवा लम्बडा सायहॅलोथिन ५% ६ मि.ली. किंवा प्रोफेनोफॉस ५० टक्के प्रवाही/१० मि.ली. प्रति १० लि. पाण्यातून फवारणी करावी. काजु पालवीवर १ ते २ टक्के युरियाची (नत्र) किटकनाशकाच्या द्रावणाबरोबर फवारणी पालवीवर व फुलधारणेवर करावी.</p> |
| नारळ         | फळधारणा                | <p>येत्या ५ दिवसात बाष्पीभवनाचा वेग वाढण्याची शक्यता असल्याने नारळ बागेस ८ ते १० दिवसांच्या अंतराने पाणी देण्याची व्यवस्था करावी.</p> <p>नारळावरील सोंडया भुंगा या किडीच्या नियंत्रणासाठी भुंग्याने पाडलेली भोके १० टक्के कार्बारील भुकटी व वाळूने बुजवून घ्यावीत. तसेच खोडावर १ मिटर उंचीवर गिरमिटच्या सहाय्याने १५ ते २० से.मी. खोल तिरपे भोक पाडून त्यामध्ये २० मि.ली. ३६ टक्के प्रवाही मोनोक्रोटोफॉस नरसाळ्याच्या सहाय्याने ओतावे आणि भोक सिमेंटच्या सहाय्याने बंद करावे.</p>  |
| सुपारी       | फळधारणा                | <p>येत्या ५ दिवसात बाष्पीभवनाचा वेग वाढण्याची शक्यता असल्याने सुपारी बागेस ८ ते १० दिवसांच्या अंतराने पाणी देण्याची व्यवस्था करावी.</p> <p>सुपारीस खतांचा दुसरा हप्ता डिसेंबर ते जानेवारी महीन्यात द्यावा त्यासाठी १६० ग्रॅम युरिया व १२५ ग्रॅम म्युरेट ऑफ पोटॅश असा द्यावा.</p>   |
| केळी         | -                      | <p>केळीच्या पर्णगुच्छ रोगाच्या नियंत्रणासाठी रोगग्रस्त झाडे मुनव्यासकट समूळ जमिनीतून उपटून नष्ट करावीत. लागवडीसाठी रोगमुक्त मुनवे निवडावेत. मावा किडीचा प्रादुर्भाव आढळल्यास डायमिथोएट १५ मि.ली. प्रति १० ली. पाण्यातून १५ दिवसांच्या अंतराने तीन वेळा फवारावे.</p>  |
| वायंगणी भात  | फुटवे फुटण्याची अवस्था | <p>उन्हाळी भात पीकाच्या पुर्णलागवडीची कामे पूर्ण करून घ्यावीत. नुकतीच लागवड केलेल्या भात शेतामध्ये सुरुवातीचे ८ ते १० दिवस पाण्याची पातळी २ ते ३ से.मी. ठेवावी. त्यानंतर ५ से.मी. पर्यंत वाढवावी.</p> <p>भातावर करपा रोगाचा प्रादुर्भाव आढळून आल्यास ट्रायसायक्लॅझोल १० ग्रॅम किंवा आयसोप्रोथिऑलेन १० मिलि प्रति १० लिटर पाण्यात मिसळून फवारावे.</p> <p>भातावर पाने गुंडाळणारी अळीचा प्रादुर्भाव आढळल्यास नियंत्रणासाठी २५% प्रवाही क्विनॉलफॉस २ लिटर किंवा ट्रायझोफॉस ४०% प्रवाही ६२५ मिली किंवा लॅमडासायहॅलोथिन ५% प्रवाही २५० मिली प्रति ५०० लिटर पाण्यामध्ये मिसळून एक हेक्टर क्षेत्रावरती फवारावे.</p>  |
| भुईमुग       | रोप अवस्था             | <p>भुईमुग पिकाच्या वाढीच्या कालावधीमध्ये पाण्याच्या दोन पाळ्यातील अंतर १५ ते २० दिवस ठेवावे.</p>   |
| कुळीथ        | शाखीय वाढ              | <p>कुळीथ पिकावर मावा व पाने पोखरणारी अळी या किडीचा प्रादुर्भाव होण्याची शक्यता असल्याने नियंत्रणासाठी १५ मिली डायमिथोएट प्रति १० लिटर पाण्यात मिसळून पिकावर फवारावे.</p> <p>अंगओलीत असल्यास कुळीथाला पाण्याची गरज नसते. परंतु ओलावा कमी असलेल्या जमिनीमध्ये पिकाला फुलो-यात असताना आणि शेंगा पोसण्याच्या काळात पाण्याच्या २ पाळ्या द्याव्यात. गरजेपेक्षा जास्त पाणी दिल्यास पिक फुलो-यात न येता फक्त शाखीय वाढ होत राहते. यासाठी पाण्याचा अति वापर टाळावा.</p>   |
| चवळी         | शाखीय वाढ              | <p>चवळी पिकावर मावा व पाने पोखरणारी अळी या किडीचा प्रादुर्भाव होण्याची शक्यता असल्याने नियंत्रणासाठी १५ मिली डायमिथोएट प्रति १० लिटर पाण्यात मिसळून पिकावर फवारावे.</p> <p>अंगओलीत असल्यास चवळी पिकाला पाण्याची गरज नसते. परंतु ओलावा कमी असलेल्या जमिनीमध्ये पिकाला फुलो-यात असताना आणि शेंगा पोसण्याच्या काळात पाण्याच्या २ पाळ्या द्याव्यात. गरजेपेक्षा जास्त पाणी दिल्यास पिक फुलो-यात न येता फक्त शाखीय वाढ होत राहते. यासाठी पाण्याचा अति वापर टाळावा.</p>   |
| कडवा वाल     | शाखीय वाढ              | <p>वाल पिकास पिकाच्या वाढीच्या सर्व अवस्थांमध्ये जमिनीमध्ये ओलावा असणे आवश्यक आहे. पिकाला फुलो-यात असताना आणि दाणे भरण्याच्या काळात पाण्याच्या २ पाळ्या द्याव्यात. ज्यादा पाण्यामुळे वालाची शाखीय वाढ होते व उत्पन्न घटते.</p>   |
| दुभती जनावरे | -                      | <p>रात्रीच्या वेळी किमान तापमानात घट होत असल्याने जनावरांचे थंडीपासून योग्य ते संरक्षण करण्यासाठी रात्रीच्या वेळी जनावरांना गोणपाटाचे पांघरून घालावे.</p>  |
| कुक्कुटपालन  | -                      | <p>थंडीचे प्रमाण वाढत असल्याने कॉंबड्यांचे थंडीपासून योग्य ते संरक्षण करावे. रात्रीच्यावेळी कॉंबड्यांचे थंडीपासून संरक्षण करण्यासाठी शेडला बाहेरून पडदे लावावेत. तसेच पिल्लांना पुरेशी ऊष्णता देण्यासाठी विद्युत दिव्यांची व्यवस्था करावी.</p>   |

सदर कृषि सल्ला पत्रिका ही डॉ. बाळासाहेब सावंत कोकण कृषि विद्यापीठाच्या, प्रादेशीक फळ संशोधन केंद्र, वेंगुर्ले व उद्यानविद्या महाविद्यालय, मुळदे येथील "ग्रामीण कृषि मौसम सेवा" योजनेतील तज्ञ समितीच्या शिफारशी वरून तयार करून प्रकाशित करण्यात आली.

डॉ. प्रदिप चं. हळदवणेकर  
सहयोगी अधिष्ठाता तथा नोडल ऑफिसर  
कृषी हवामानशास्त्रीय क्षेत्र एकक  
ग्रामिण कृषि मौसम सेवा  
उद्यानविद्या महाविद्यालय, मुळदे  
०२३६२-२४४२३१

डॉ. यशवंत चं. म्ठाळ  
तांत्रिक अधिकारी  
कृषी हवामानशास्त्रीय क्षेत्र एकक  
ग्रामिण कृषि मौसम सेवा  
उद्यानविद्या महाविद्यालय, मुळदे  
०२३६२-२४४२३१